विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2562, आषाढ़ पूर्णिमा 27 जुलाई, 2018, वर्ष 48, अंक 1

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

ओवदेय्यानुसासेय्य, असब्भा च निवारये।
सतञ्हि सो पियो होति, असतं होति अप्पियो।।
धम्मपद-77, पण्डितवग्गो.

जो उपदेश दे, अनुशासन करे, अनुचित कार्य से रोके, वह सत्पुरुषों का प्रिय होता है और असत्पुरुषों का अप्रिय।

विपश्यना साधना के स्वर्ण जयंती पर

पूज्य गुरुजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का सुअवसर

3 जुलाई, 1969 को विपश्यना साधना का पहला शिविर मुंबई की पंचायतीवाडी धर्मशाला में लगा। इस प्रकार भारत में इसके पुनरुत्थान की 50वीं वर्षगांठ, यानी, 3 जुलाई 2018 से 2 जुलाई 2019 तक पूरे वर्ष भर स्वर्ण जयंती समारोह मनाने का संकल्प है, ताकि यह वर्ष साधकों की दैनिक साधना पुष्ट करने में सहायक हो। इसके लिए पूरे वर्ष भर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में प्रतिदिन एक दिवसीय शिविर नियमित रूप से चलते रहेंगे। जिस किसी साधक-साधिका को जिस दिन भी समय मिले, इन शिविरों का लाभ उठा सकते हैं। इससे साधकों की साधना में निरंतरता और नियमितता आयेगी और उनसे प्रेरणा पाकर अधिक से अधिक लोगों में सद्धर्म के प्रति जागरूकता पैदा होगी और वे भी शिविरों में सम्मिलित होकर अपना कल्याण साध सकेंगे। अन्य स्थानों पर भी लोग इसी प्रकार दैनिक साधना, सामूहिक साधना तथा एक दिवसीय शिविरों द्वारा इस विद्या के व्यावहारिक अभ्यास को पुष्ट करके ही समारोह मनायें, यही पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और कृतज्ञता होगी।

इसका प्रारंभ पत्रिका में विश्व विपश्यनाचार्य पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी का संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर कर रहे हैं। इस अवसर पर प्रस्तुत है श्री गोयन्कजी की कलम से उनके पुरखों के बरमा प्रवास और व्यापार-कथा की प्रथम कड़ीः--

धर्मदेश में सवा सौ वर्ष

सवा सौ वर्ष पहले एक अदम्य उत्साही नवयुवक अपने पूर्वजों के नगर चूरू से राजस्थान के रेगिस्तान को कहीं पैदल और कहीं ऊंट पर सवार होकर पार किया। फिर कलकत्ते तक की यात्रा रेलगाड़ी से पूरी की। उसके आगे छोटे जहाज में सवार होकर समुद्र पार कर ब्रह्मदेश के रंगून नगर में पहुँचा। आजीविका की खोज में इतनी कष्टभरी यात्रा पूरी की।

मैं नहीं जानता कि बाबा ने बर्मा आते ही किस प्रकार का व्यापार आरंभ किया? परंतु बचपन में उनके मुँह से जो कुछ सुना, उससे अनुमान कर सकता हूं कि उन्होंने अपनी आजीविका कपड़े के व्यापार से ही शुरू की। वे रंगून से कपड़ा खरीद कर उन दिनों की बरमी राजधानी मांडले ले जाकर बेचते होंगे। फिर हो सकता है उन्होंने रंगून और मांडले के बीच होने वाले इस व्यवसाय को बंद करके अन्य क्षेत्र चुना हो। तब वे कपड़े के थान घोड़ों पर लाद कर मांडले से शान प्रदेश में जाने लगे। वहां उन दिनों छोटी-छोटी मंडियों में सप्ताह में एक बार बाजार लगने की प्रथा थी। अलग-अलग मंडी पर अलग-अलग दिन बाजार लगते होंगे। इस कारण बाबा घोड़ों पर माल लादे स्वयं भी एक घोड़े पर चढ़ कर अथवा कभी-कभी घोड़ों के साथ ऊबड़-खाबड़ पथरीले रास्तों पर पैदल चल कर एक बाजार से दूसरे बाजार में जा-जा कर अपना माल बेचते रहे होंगे। हम कल्पना भी नहीं कर

सकते कि इस अध्यवसाय में उन्हें कितना कष्ट उठाना पड़ा होगा? विशेष कर खान-पान में। कट्टर सनातनी निरामिषभोजी संस्कारों के कारण महीने बीस दिन की यात्रा का भोजन वे अपने साथ लेकर चलते होंगे। इन बासी रोटियों और सूखी सब्जी व अचार के साथ अपनी नित्यप्रति की क्षुधापूर्ति करते होंगे। पानी पीने की भी कठिनाई। उसके लिए अपनी लंबी राजस्थानी पगड़ी को खोल कर डोर बनाते हुए अपने साथ लाए लोटे को उससे बांध कर किसी कुएं से पानी निकाल कर पीते होंगे। अनेक वर्षों के इस कठिन परिश्रम के बाद जब उनके तीनों पुत्रों की उम्र भी काम करने लायक हो गयी तब मांडले में एक छोटी-सी दुकान खोल कर स्थिरता से व्यापार करने लगे। धीरे-धीरे व्यापार बढ़ता गया। छोटी दुकान बड़ी और फिर उससे बड़ी दुकान में परिवर्तित होती गयी। आगे जाकर सारा व्यापार उनके पुत्रों द्वारा संभाल लिए जाने पर वे बिल्कुल निवृत्त हुए।

जन्म और बचपन

मेरा जन्म ब्रह्मदेश के प्रमुख नगर मांडले में माघ शुक्ला 12, संवत् 1980 (16 फरवरी, सन् 1924), शनिवार के दिन हुआ था।

पैतृक निवास चूरू (राजस्थान) में हवेली का निर्माणकार्य करवाने के लिए जब ताऊजी श्री द्वारकादासजी चूरू आने लगे तब मुझे भी साथ ले आये। वहां आकर मैं अपनी बुआ के साथ रहने लगा और स्कूल में जाकर पढ़ाई करने लगा। इस प्रकार दो वर्ष तक चूरू की पाठशाला में कासू गुरुजी

के अंतर्गत ककहरा और बारहखड़ी की शिक्षा प्राप्त की। इधर हवेली का भी काम पूरा हो चुका था। अत: ताऊजी के साथ ही म्यंमा वापस लौट गया।

सभी गुरुओं के प्रति श्रद्धाभाव

चूरू की पाठशाला में हिंदी की वर्णमाला, बारहखड़ी, गिनती और पहाड़ों का विद्यादान देने वाले बचपन के गुरु - कासूजी एक आंख के काने थे। कुछ बच्चे उनकी हँसी उड़ाते और अपशब्द कहते–

'कासू काणो, छोरां ने पढ़ाणो।'

कासू गुरुजी का एक तकियाकलाम था- वह हर बात में 'हाऊ' बोलते थे। इसलिए बच्चों ने कहना शुरू किया–

'कासू बोले हाऊ, मैं कासू को ताऊ।'

मेरे बालसुलभ मानस में भी ये शब्द पैठ गये और घर पर मेरे मुँह से यूं ही निकल गये। मेरी बुआ ने सुना तो वह बहुत नाराज हुई और मेरा कान पकड़ कर बोली, जो तुम्हें विद्या का दान देता है वह पूज्य और सम्मान का पात्र होता है। किसी गुरु के प्रति कभी ऐसे अपशब्द नहीं कहने चाहिए।'

बुआ की इस प्रताड़ना से कासू गुरु ही नहीं, सभी गुरुओं के प्रति आस्था का भाव जागा। मैंने उसकी यह बात गांठ बांध ली और फिर दुबारा मेरे मुँह से ऐसे शब्द कभी नहीं निकले।

कुछ समय पश्चात कासू गुरुजी का देहांत हो गया। बच्चों ने फिर कहना आरंभ किया

कालीजी के मंदिर की धोळी ध्वजा।

कासू मरग्यो खूब मजा ।।

परंतु मेरे मुँह से ऐसे शब्द फिर कभी नहीं निकले। यह जान-समझ कर मेरी बुआ बहुत प्रसन्न हुई। सबसे बड़ी शिक्षा तो बुआ की ही थी। उसने पूज्य गुरुओं के प्रति श्रद्धा का पहला पाठ जो पढ़ाया था।

बरमा लौटने पर पहली कक्षा की पढ़ाई के लिए वहां की मारवाड़ी पाठशाला में भरती हुआ। वहां गुरुजी श्री कल्याणदत्तजी दुबे भी बहुत अच्छे और पूज्य थे। दो वर्ष तक उनके सान्निध्य में पढ़ने के बाद मुझे हिंदी की अच्छी खासी जानकारी हो गयी।

कल्याणदत्त दुबेजी

जीवन की सांध्य वेला में मानसपटल पर जिन-जिन गुरुजनों की स्मृति रेखाएं उभरती हैं, उनके प्रति हृदय कृतज्ञता के भावों से उर्मिल उर्मिल हो उठता है। चूरू की पाठशाला में हिंदी की वर्णमाला, बारहखड़ी, गिनती और पहाड़ों का विद्यादान देने वाले कासू गुरुजी के बाद जिन-जिन गुरुजनों से जितनी-जितनी विद्या प्राप्त की उनके चेहरे बार-बार स्मृतिपटल पर उभर-उभर कर आते हैं और तन-मन को रोमांच-पुलक से भर देते हैं। लगभग पांच वर्ष की आयु में चूरू में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर जन्मभूमि मांडले लौटा तब वहां की २८ वीं गली में पुरानी मारवाड़ी धर्मशाला में चल रहे मारवाड़ी स्कूल में पढ़ाई आरंभ की। इसे स्कूल न कह कर पाठशाला ही कहना अधिक उचित होगा। इसमें केवल तीन कक्षाएं थीं। कुछ बच्चे एक दीवार के सहारे जमीन पर बैठ कर स्लेट पर लिख-लिख कर प्रारंभिक पढ़ाई करते थे। दूसरी दो कक्षाओं के बच्चे लंबी-लंबी बेंचों पर बैठ कर सामने रखे लंबे डेस्कों का प्रयोग करते थे। उन तीनों के बीच कोई दीवार या पार्टीशन नहीं था। सभी बच्चे एक दूसरे को देख सकते और आवाजें सुन सकते थे। तीनों कक्षाओं के लिए केवल एक ही मास्टरजी थे और वे थे कल्याणदत्त दुबेजी, जो कि बिना किसी निश्चित समय के इन तीनों में से किसी एक कक्षा में रखी हुई कुर्सी पर बैठ कर उन्हें पढ़ाते थे। उस बाल्यावस्था में मानसपटल पर जिस व्यक्ति की सबसे गहरी छाप पड़ी, वे दुबेजी ही थे। दुबेजी २५-३० वर्ष के सुंदर युवक थे। सफेद धोती और कमीज पहने, चेहरे पर काला चश्मा लगाये हुए, उनके करुणासिक्त मुस्कानभरे होंठ बहुत आकर्षक थे। हम विद्यार्थियों के प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव उमड़ पड़ता था। शायद सभी विद्यार्थी ऐसा ही समझते थे, परंतु मुझे यों लगता था कि मुझ पर उनका वात्सल्य भाव विशेष था।

मास्टरजी की हर हरकत मेरे बाल मानस पर अपना एक आदर्श प्रभाव छोड़ती थी। समय से कुछ पहले स्कूल पहुँच जाता तो देखता कि धवल वसना, हंसवाहिनी, वीणाधारिणी मां सरस्वती के सुंदर चित्र के सम्मुख बैठे हैं और आंख बंद किये हुए हाथ जोड़े, मधुर कंठ से सरस्वती स्तवन का पाठ कर रहे हैं –

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला... आदि आदि।

मधुर कंठ से गाया हुआ उनका यह भक्तिभाव भरा स्तोत्र मुझे भावविभोर कर देता था। मेरे उर्वर बाल मानस में मां शारदा के प्रति भक्ति का यह बीजरूपी गीत आगे जाकर प्रस्फुटित, अंकुरित और फलित-फूलित हुआ। जीवन के दूसरे दशक में हाईस्कूल में बर्मी भाषा सीखते हुए बर्मी पाठ्यपुस्तक में शारदा वंदन का पाठ आया तो उस गीत ने भी अपनी ओर खूब खींचा था।

तूयाताट्टी (हे, मां सरस्वती) तूं देवी (विशिष्ट देवी) सैली यूली यूबाई (दसों अँगुलियों को जोड़ कर मैं आप की वंदना का गीत गाता हूँ)।

यूं इस तिपिटक धारिणी मां सरस्वती का श्रद्धास्पद स्वरूप भी मन मंदिर में पूज्यभाव से स्थापित हुआ। यद्यपि उन दिनों इसका जरा भी ज्ञान नहीं था कि तिपिटक किसे कहते हैं!

अपनी स्मरण शक्ति को खूब कुरेदता हूं परंतु इसका रंचमात्र भी स्मरण नहीं होता कि मांडले की पाठशाला में भर्ती होकर मैंने चूरू में पढ़ी हिंदी वर्णमाला के आगे और क्या-क्या पढ़ाई की! उस पाठशाला में लगभग आठ वर्ष की उम्र तक दुबेजी से पढ़ता रहा, परंतु इस दौरान दुबेजी ने मुझे हिंदी गद्य की कोई पाठ्यपुस्तक पढ़ाई हो इसका जरा भी स्मरण नहीं है। जहां तक मुझे याद है, मुझे जो हिंदी की पहली पुस्तक पढ़ाई गयी वह 'रहिमन सुधा' नामक हिंदी के दोहों की पुस्तक थी।

संभवत: मेरी हिंदी की पढ़ाई गद्य से आरंभ नहीं ही हुई हो, पद्य से ही हुई हो। अत: हिंदी भाषा के साथ-साथ हिंदी पद्य के प्रति आकर्षण का पहला बीज पड़ा। दुबेजी स्वयं हिंदी के कवि थे। अखिल भारतीय हिंदू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष बरमी भिक्षु प्रवर 'ऊ उत्तमजी' जब भारत से स्वदेश लौटे तब उन्होंने बर्मा के अनेक स्थानों की यात्रा की। स्थानीय संस्थाओं में उनका भव्य स्वागत हुआ। मांडले आये तो मांडले में भी स्वागत के अनेक कार्यक्रम हुए। एक कार्यक्रम हमारे स्कूल में भी था। दुबेजी ने उनके स्वागत में एक भावपूर्ण कविता रची, जिसे हम विद्यार्थियों ने मिल कर गाया। उसके अंतिम बोल थे–

... जैसे आप उत्तम हैं, हमें उत्तम बना जायें।

दुबेजी की काव्य रचना का मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जो कि आगे जा कर मेरे लिए पद्य रचना के क्षेत्र में प्रभूत प्रेरणा का कारण बना। उस छोटी उम्र में भी हिंदी के एक दोहे की रचना हुई जिसमें इस बालक की तुतलाहट प्रकट हुई।

रहिमन सुधा पढ़ते-पढ़ते मैंने उस अल्पायु में ही एक दोहा लिख लिया। बाबा ने जब उसे सुना तो वे बहुत हँसे। वह दोहा तो मुझे याद नहीं, पर मैंने तो यही समझ रखा था कि दोहा वही है जिसमें रहीम या रहिमन शब्द जुड़ा हो। परंतु बाबाजी ने हँसते हुए कहा कि यह तो तुम्हारा रचा हुआ दोहा है। इसमें रहीम का नाम क्यों, इसमें तो तुम्हारा नाम होना चाहिए। मैं झेंप गया। परंतु मेरे जीवन में दोहों की रचना का यह प्रथम प्रयास था।

वैसे बाबा के मुँह से बार-बार राजस्थानी के दोहे सुना करता था–

चल सुंदर मिंदर चलां, तुझ बिन चल्यो न जाय।
माता दी आसीसड़ी, बै दिन पूण्या आय।

वे मुझे समझाते कि माता अपने बच्चे को यही आशीष देती है और मुझे भी यही आशीष मिली– 'बेटा, बूढ़ो डोकरो होये! (अर्थात बूढ़ा होने तक खूब लंबी उम्र हो।)

इसलिए कैसे माता की दी हुई आशीष अब काम कर गयी और बूढ़ा

डोकरा हो गया। जिस लाठी को लेकर बाबा चलते थे, उसे ही 'सुंदर' (सुंदरी) कहते थे क्योंकि उसके बिना तो मंदिर नहीं जा सकते थे।

उनके मुँह से सुना एक और दोहा--

पात झड़न्ता यूं कह्या, सुण तरुवर बनराय।
इब का बिछड़ा ना मिलां, दूर पड़ांगा जाय।

इस दोहे का अर्थ उन्होंने नहीं समझाया पर आगे जाकर स्वत: समझ में आने लगा कि वे अपनी मृत्यु का उल्लेख कर रहे थे जिसके कारण परिवार से बिछुड़ना बड़ा दु:खदायी होता है।

बचपन में इन दोहों के जो बीज मन में पड़े, उन्हीं से भविष्य में अनेक राजस्थानी और हिंदी दोहों की रचना हुई।

मांडले शहर के बाहर एक गऊशाला थी। हर वर्ष गोपाष्टमी पर वहां एक मेला लगता, जिसमें नगर के विद्वानों के भाषण होते। इसमें गो-भक्तों की बहुत बड़ी मंडली इकट्ठी होती थी। गुरुदेव श्री दुबेजी ने कहा कि उस मंडली के सामने मैं भी एक भाषण दूं तो उसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा। इसके लिए श्री दुबेजी ने चार पन्ने का एक भाषण लिख दिया। उसे बाबाजी ने देखा तो कहा, 'पढ़ कर सुनाओगे तो क्या बहादुरी है। इसे रट लो तो बहुत प्रशंसनीय होगा।' पांच दिन का समय था। मैंने चारों पन्ने रट लिये और गोपाष्टमी की सभा में अपना भाषण कंठस्थ करके सुनाया। लोग चकित हो गये। मास्टरजी भी बहुत प्रसन्न हुए। मारवाड़ी स्कूल की पहली कक्षा के विद्यार्थी के लिए यह बहुत बड़ी बात थी ।

इन्हीं दिनों उन्होंने "परिवर्तन" नाम का एक नाटक स्वयं लिखा, जिसका मंचन उनके ही निर्देशन में हुआ।

मुझे एक ऐसे राजा के राजकुमार की भूमिका दी, जिसकी राज्यसत्ता समाप्त होने पर वह कंगाल हो गया और एक भिखारी की तरह अपने राज्य से बाहर निकल कर गांव की ओर चल पड़ा। मुझे गांवों का कभी कोई अभ्यास नहीं था। फिर भी बड़ी तत्परता से गांव का जीवन अपनाया। मुझसे जो गीत गवाया गया, उसके बोल थे–

'करमगति टारे नाहिं टरी।'. इसे लोगों ने बहुत सराहा। इस नाटक से मुझे जीवन के ऐसे उतार-चढ़ावों को झेलने की जो प्रेरणा मिली, वह जीवन भर काम आयी। कविता-पाठ और नाटकों की प्रवृत्ति बढ़ती गयी और मैंने अनेक नाटकों में भाग लिया ।

उसके बाद ३री कक्षा की पढ़ाई के लिए खालसा स्कूल में भरती हुआ। वहां भी दो-तीन नाटकों में भाग लिया और प्रशंसा का पात्र बना। स्कूल के आखिरी दिनों के नाटक में मैंने सम्राट अशोक की भूमिका निभाई, जिसे देखने के लिए देश का प्रधानमंत्री ऊ नू आया और उसने लोगों के सामने प्रशंसा के दो शब्द भी कहे ।

इन्हीं दो घटनाओं ने उस उम्र में ही मंच पर बोलने की झिझक और झेप सदा के लिए मिटा दी, जो कि भविष्य में बर्मा में हिंदी प्रचार और विश्व में विपश्यना प्रचार के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुई।

गुरुवर दुबेजी की महती कृपा से उस बाल्यावस्था में मातृ-पितृ भक्ति, उनकी आज्ञा का सहर्ष पालन, बड़े भाइयों के प्रति आदर और छोटों के प्रति त्यागभरे प्यार की जो अमृत घूंटी मिली, वह जीवन भर बहुत काम आयी। मानस की उर्वरा भूमि पर धर्म का जो यह बहुमूल्य बीज बोया गया उससे उपजी बेल में बड़े मधुर फल ही लगे।

क्रमशः .....

विपश्यना की 50वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती समारोह) के अवसर पर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में पूरे वर्ष भर प्रतिदिन साधना और एक-दिवसीय शिविर

हमें उन पर गर्व है जिन्होंने 3 जुलाई 1969 को विपश्यना के पहले शिविर में धम्म में डुबकी लगाई। यह भारत में दूसरे बुद्ध सासन के आवर्तन का प्रतीक हुआ, जब पूज्य गुरुजी श्री सत्यनारायण गोयनकाजी ने मुंबई की पंचायती वाडी धर्मशाला, कालबादेवी में पहले 10-दिवसीय विपश्यना शिविर का संचालन किया। तब से हम सभी के लाभ के लिए धम्म का चक्का तीव्र गति से घूमने लगा और लाखों लोगों का कल्याण कर रहा है।

3 जुलाई, 2018 को धम्म की वापसी का 50वां वर्ष, यानी, स्वर्णजयंती वर्ष प्रारंभ हुआ। हम सभी को उत्साह के साथ यह पर्व मनाने का शानदार सुअवसर है। जैसा कि हमें सिखाया गया कि असली उत्सव नियमित ध्यान करना और धर्मपथ पर आगे बढ़ना है। इसलिए, इस पर्व पर, पूरे 365 दिन ग्लोबल विपश्यना पगोडा में साधना और एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

वैश्विक विपश्यना फाउंडेशन (Global Vipassana Foundation—GVF) सभी साधक-साधिकाओं को आमंत्रित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है। यह उन साधकों के लिए बहुत अच्छा अवसर होगा जो धम्म के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए तत्पर हैं और दैनिक अभ्यास को बनाए रखने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं। जो लोग दैनिक अभ्यास की निरंतरता बनाए रखने में असमर्थ हैं, उनको भी नई ऊर्जा के साथ अपना अभ्यास फिर से शुरू करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

एक दिवसीय शिविर प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से सायं 5 बजे तक हुआ करेगा। जिन्होंने सयाजी ऊ बा खिन की परंपरा में, गुरुजी या उनके सहायक आचार्यों द्वारा सिखाया जाने वाला कम-से-कम एक 10-दिवसीय विपश्यना शिविर पूरा किया हो, वे सभी इनमें भाग ले सकते हैं। आवश्यक और उचित व्यवस्था करने के लिए प्रतिभागियों की संख्या जानना आवश्यक होगा। इसलिए, कृपया पंजीकरण अवश्य करायें। पंजीकरण बहुत आसान है बस 8291894644 पर DATE के साथ YES लिख कर, WhatsApp संदेश भेजें या SMS द्वारा 82918 94645 पर Date के साथ YES लिख कर भेज दें।

आप सभी धम्म भाइयों-बहनों से अनुरोध है कि हमारी इस धम्म-डोर को मजबूत करने, पूज्य गुरुजी के कार्य को आगे बढ़ाने और धम्म को चिरकाल तक प्रतिष्ठापित करने के पुण्यकार्य में भागीदार हों, यही हमारी विनम्र प्रार्थना है।

सब का मंगल हो!

पटना के बुद्ध स्मृति पार्क में विपश्यना शिविर का शुभारंभ

बिहार की राजधानी पटना के रेल्वे जंक्शन के पास विश्व स्तरीय 'बुद्ध स्मृति पार्क' में पूर्णतया वातानुकूलित दो भवनों को दस दिवसीय शिविर हेतु सरकार की ओर से नगर आवास विकास मंत्री श्री सुरेश शर्मा द्वारा 3 जुलाई, 2018 को लोकार्पण किया गया। पार्क का भाग होते हुए भी इन भवनों को पार्क की अन्य गतिविधियों से अलग रखने के लिए हरियालीयुक्त सीमा-रेखा बनाई गयी है, ताकि साधना में व्यवधान न हो। किसी सरकार द्वारा इतने साधन-सुविधा युक्त भवनों का लोकार्ण अपने आप में एक ऐतिहासिक घटना है। 3 जुलाई को ही यहां प्रथम शिविर लगा जिसमें 23 पुरुष और 9 महिलाओं ने दस दिवसीय शिविर का लाभ उठाया। आचार्य व सेवक आदि कुल मिलाकर 50 लोग थे। दूसरा शिविर 16 से 27 जुलाई तक चलेगा। भवनों में कुल 70 साधकों के अतिरिक्त आचार्यों तथा धर्मसेवक-सेविकाओं के निवासादि की भी सुविधा है। मुख्यमंत्री श्री नितीशकुमार की यह महत्त्वाकांक्षी पहल है कि इस केंद्र से बिहार के ही नहीं, बल्कि विश्व के सभी लोग लाभान्वित हों। भगवान गौतम बुद्ध की सर्वदुःखहारिणी विद्या जो बिहार में विकसित हुई थी, वह विश्व विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी द्वारा वापस लायी गयी है तो अब यह पूरे बिहार में फैले और सारे विश्व का कल्याण करे। इसमें सरकार का पूरा सहयोग मिलता रहेगा

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी **धातु-गब्भ** पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण दीर्घकाल तक धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। संपर्क- उपरोक्त (GVF) के पते पर...

अंशकालिक गैर आवासीय लघु पाठ्यक्रम विपश्यना ध्यान का परिचय (सैद्धांतिक रूप में)

विपश्यना विशोधन विन्यास और मुंबई यूनिवर्सिटी के संयुक्त आयोजन से नया लघु पाठ्यक्रम 'विपश्यना ध्यान का परिचय' शुरू होने जा रहा है, जो विपश्यना ध्यान के सैद्धांतिक पक्ष एवं विभिन्न क्षेत्रों में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता को उजागर करेगा।

पाठ्यक्रम की अवधि : 2 अगस्त 2018 से 1 नवंबर 2018 (3 महीने)

स्थान : सभागृह नंबर 2, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराई, बोरीवली (प), मुंबई. 400091 अधिक जानकारी एवं आवेदन पत्र इस वेब लिंक पर प्राप्त करें |

https://www.vridhamma.org/Pali-Study-Programs; संपर्क: 022-62427560 (सुबह 09:30 से श्याम 05:30); ई-मेल: mumbai@vridhamma.org

अतिरिक्त उत्तरदायित्व

1. श्री आलोक साहू, धम्मकेतु विपश्यना केंद्र के केंद्र-आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री कपिलनाथ साहू, रायपुर (छत्तीसगढ़)
2. श्रीमती महानंदा चिकाटे, चंद्रपुर (महा.)

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री विनीत शर्मा, गाज़ियाबाद, उ.प्र.
5. Chang Jih-Liang, Taiwan.

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्री प्रांजल पाटिल भुसावल
2. कु.अश्विनी शिंदे भुसावल
3. श्री अजय इंगले भुसावल

Registered No. NSK/RNP-235/2018-2020

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिचालनार्थ सेंचुरीज कॉर्पस फंड

पूज्य गुरुजी की इच्छा थी कि **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** अगले दो-ढाई हजार वर्षों तक सुचारु रूप से लोगों की धर्मसेवा करता रहे, परंतु यहां आने वालों से कोई शुल्क न लिया जाय, ताकि गरीब-अमीर सभी लोग यहां आसानी से पहुँच सकें और सद्धर्म की जानकारी लेकर धर्मलाभ प्राप्त कर सकें, और इसके दैनिक खर्च को संभालने के लिए एक **'सेंचुरीज कार्पस फंड'** की व्यवस्था की जाय। उनकी इस महान इच्छा को पूर्ण करने के लिए **'ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन'** (GVF) ने हिसाब लगाया कि यदि 8760 लोग, प्रत्येक व्यक्ति रु. 1,42,694/-, एक वर्ष के अंदर जमा कर दें, तो 125 करोड़ रु. हो जायँगे और उसके मासिक ब्याज से यह खर्च पूरा होने लगेगा। कोई एक साथ नहीं जमा कर सके तो किस्तों में भी जमा कर सकते हैं।

संतों की वाणी है कि जब तक भगवान बुद्ध की धातु रहेगी, उनका धर्म भी कायम रहेगा। इस माने में केवल पत्थरों से बना यह धातुगब्भ पगोडा हजारों वर्षों तक बुद्ध-धातुओं को सुरक्षित रखेगा और इसमें ध्यानाभ्यास करने वाले असंख्य प्राणियों को धर्मलाभ मिलेगा। यानी, इसके परिचालन की भारी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु, साधक तथा असाधक सभी दानियों को सहस्राब्दियों तक अपनी धर्मदान की पारमी बढ़ाने का एक सुखद सुअवसर है। अधिक जानकारी तथा निधि भेजने हेतु **संपर्क**:-- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512 / 62427510; **Email--** audits@globalpagoda.org; **Bank Details:** 'Global Vipassana Foundation' (GVF), Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No.- 911010032397802; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

धम्मालय-2 (आवास-गृह) का निर्माण कार्य

पगोडा परिसर में 'एक दिवसीय' महाशिविरों में दूर से आने वाले साधकों तथा धर्मसेवकों के लिए रात्रि-विश्राम की निःशुल्क सुविधा हेतु "धम्मालय-2" आवास-गृह का निर्माण कार्य होगा। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे कृपया उपरोक्त (GVF) के पते पर संपर्क करें।

नौसेना के अधिकारियों को आनापान

भारतीय नौसेना में प्रशिक्षणार्थी तथा सेवारत अधिकारियों को विपश्यना और आनापान सिखाने की मांग जोरों से उठ रही है। पिछले दिनों लोनावला (INS Shivaji Lonavala) के 140 लोगों को आनापान का प्रशिक्षण दिया गया जिनमें कार्यालयीन कर्मचारी और उनके परिवार के लोग भी सम्मिलित हुए। इसी प्रकार मुंबई (INS Hamla Malad) के 80 लोगों में अधिकारियों के साथ उनके परिवार के 15 लोगों ने भी धर्मलाभ उठाया।

इसी प्रकार नेवी के स्कूल के छात्रों को भी आनापान सिखायी गयी और उनके नियमित अभ्यास की व्यवस्था की गयी है। अधिक जानकारी के लिए निम्न वेबसाइट देखें :--

https://www.indiannavy.nic.in/content/%E2%80%98vipassana-anapana%E2%80%99-orientation-course-ins-shivaji

ग्लोबल पगोडा में सन 2018 के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार 29 जुलाई- **आषाढ़ी पूर्णिमा, रविवार** 30 सितंबर- **शरद पूर्णिमा** एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि** *(29 सितंबर)* के उपलक्ष्य में **एक दिवसीय** महाशिविर होंगे। **समय-** प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो-** सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

अंतर्मन की गहनता, सहज न देखी जाय।
गुरुवर की होवे कृपा, मुक्ति-युक्ति मिल जाय।।

धन्य भाग! गुरुवर मिले, करुणा के भंडार।
अंधे को आंखें मिली, सत्य धर्म का सार।।

गहन निशा वन भटकते, हुआ विकल गुमराह।
सहज दिखाया धर्मपथ, गुरु ने पकड़ी बांह।।

शुद्ध धरम ऐसा मिला, राग जगे ना द्वेष।
चित्त निपट निर्मल बने, रहे न दुख लवलेश।।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

गुरुवर दीनी साधना, चख्यो धरम रो स्वाद।
संगत सुखदा संत री, मन रो मिट्यो विसाद।।

पथ भूल्यो दिग्भ्रम हुयो, रह्यो हियो अकुळाय।
धन धन धन गुरुदेवजू! सतपथ दियो दिखाय।।

भटकत भटकत बीतती, मिनख जूण री खोळ।
जदि गुरुवर देतो नहीं, धरम रतन अणमोल।।

जदि सतगुरु मिलतो नहीं, धरम गंग रै तीर।
तो बस गंगा पूजतो, कदे न पीतो नीर।।

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2562, आषाढ़ पूर्णिमा, 27 जुलाई, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 15 JULY, 2018, DATE OF PUBLICATION: 27 JULY, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144,
244440. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org